International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 02, February 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में आंतरिक परीक्षण से संबंधित उपलब्धि पर माता–पिता की भूमिका

शोधार्थी:
दिब्या प्रियदर्शिनी
सहायक प्राध्यापक
सी.एन. कॉलेज, साहेबगंज
मुजफ्फरपुर

'शिक्षा' का अंग्रेजी प्रतिशब्द है 'एजूकेशन' (Education)। अंग्रेजी एजूकेशन – लैटिन शब्द 'एड्रकेटम' से निष्पन्न है। एडूकेटम में जो 'ई' है उसका अर्थ 'अन्दर से बाहर' और 'डूको' का अर्थ है 'निकालना'/यानी 'अन्दर से बाहर की और निकालना' 'एडूकेटम का अर्थ है। इस दृष्टि से यह ध्वनित होता है कि व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों एवं योग्यताओं के विकासात्मक रूप को 'एडूकेशन' की संज्ञा प्राप्त है।

शिक्षा का सामान्य और प्रचलित अर्थ

सामान्यतः शिक्षा का अर्थ विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थाओं में प्राप्त की जाने वाली कक्षागत शिक्षा से है। यह शिक्षा का सीमित अर्थ है क्योंकि शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों द्वारा केवल पाठ्य सामग्री की सहायता से केन्द्रीय शिक्षा प्रदान की जाती है। पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकें, तथा शिक्षा संगठन आदि की सहायता से जो शिक्षा दी जाती हैं उसकी कतिपय सीमाएँ हैं। यह सविधिक शिक्षा है जिसमें शिक्षा का कार्य, स्थान और समय निश्चित होता है। जबकि जीवन व्यापक विस्तृत और वैविध्यपूर्ण होता है।

शिक्षा का बहु व्यंजक अर्थ

'शिक्षा' व्यापकता में मात्र संस्थानिक शिक्षा नहीं है। वह जीवन चलने वाली सम्यक और समग्र प्रक्रिया है। व्यक्ति जन्म से अन्तिम सांस गिननेतक हर क्षण कुछ–न–कुछ सीखता रहता है। परिवर्तित प्रकृति, परिवेश और परस्पर के आहार व्यवहारों से व्यक्ति निरन्तर नयी बातों और नये अनुभवों से अपने को समृद्ध करता रहता है। यह एक अविरल और गतिशील प्रक्रिया है। शिक्षा जड़ नहीं, चेतन है। इसमें गत्यात्मक ग्रहणशीलता का गुण निहित है। यह जीवंत क्रिया है। जिस प्रकार कमल सूर्य के प्रकाश से खिल–खिलाता है और सूर्य के अस्ताचलगामी होने पर वह कुम्हला जाता है, उसी प्रकार मनुष्य भी शिक्षा रुपी प्रकाश पाकर प्रफुल्लित होता है और शिक्षा रहित होने पर मलिन रहता है।

अतः सामाजिक और विस्तृत अर्थ में शिक्षा मनुष्य को उस योग्य बनाने वाली प्रक्रिया है जो उसे समाज का श्रेष्ठ प्राणी बनाकर समाज को विकसित करने के उद्देश्य से अग्रतर करती है। शिक्षा वह समन्धित कार्य है, जिसके सहारे व्यक्ति के व्यक्तित्व का उर्ध्वमुखी विकास होता है। व्यक्ति शिक्षित होकर सुसभ्य बनता है। उसकी पाशविकता शमित होती है। शिक्षा से मनुष्य में उन शक्तियों का विकास होता है, जिससे वह जटिल, कठिन, विपरीत और संघर्षमय परिस्थितियों से जूझने में सफल होता है। उसे कामयाबी मिलती है। यह कोई लेन देन की

भौतिक सत्ता नहीं है, बल्कि यह वह चेतन सत्ता है, जिसे व्यक्ति स्वयं प्रयत्नपूर्वक प्रज्ञा से ग्रहण करता है। यह अनादिकाल से अनवरत चलने वाली अन्तहीन प्रक्रिया है। तब से लेकर अब तक मनुष्य ने जो कुछ सीखा है, उसे शिक्षा का रूप दिया है। निश्चय ही शिक्षा मानव समाज की सीख पूर्ण संचित निधि है जो परम्परा और परिस्थिति से प्रेरित होकर मनुष्य ग्रहण करता रहा है।

शिक्षा की परिभाषा

'शिक्षा' दीर्घकालिक और बहुआयामी घटक है – इसलिए इसकी सर्वमान्य परिभाषा संभव नहीं है। अनेक ज्ञानानुशासनों एवं चिन्तन धाराओं में शिक्षा विषयक अनुचिन्तन हुए है और इसे परिभाषित करने के प्रयत्न भी किये गये है।

पश्चिमी विचारक रुसो का मानना है कि ''शिक्षा जीवन है। शिक्षा का केन्द्र बालक है। इसलिए शिक्षा का ध्येय व्यक्तित्व का उत्कर्ष है।'' यह परिभाषा व्यापक और सार्थक है क्योंकि जीवन के उन्नयन के लक्ष्य को समेटे हुए है।

पेस्तालात्सी ने शिक्षा को आन्तरिकता, क्रियाशीलता एवं संचित अनुभवों के माध्यम से परिभाषित करते हुए कहा है – ''शिक्षा हमारी अन्तः शक्तियों का विकास है ऊपर से लादा हुआ ज्ञान नहीं है। वह स्वयं बच्चों की कार्यशीलता तथा उसके अनुभवों का परिणाम है।'' अर्थात् शिक्षा मनुष्य को उस योग्य बनाने वाली प्रक्रिया है, जिससे वह ईश्वर द्वारा प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करे और समाज का उपयोगी और महत्वपूर्ण सदस्य बने। पेस्तालात्सी ने यह भी कहा है – ''शिक्षा मनुष्य की समस्त शक्तियों का स्वाभाविक, समरस तथा प्रगतिशील विकास है।'' पश्चिमी विचारक जौन डुई – शिक्षा की परिभाषा को और अग्रतर करते हुए कहते हैं – ''शिक्षा वह क्रम है जिसमें व्यक्ति शक्तियों पर नियंत्रण प्राप्त करता है और व्यक्तिगत अनुभवों द्वारा सामाजिक उत्कर्ष में सहयोग प्रदान करता है।'' यानी शिक्षा आन्तरिक शक्तियों का दांति विकास है, जिसके बल पर व्यक्ति समाज का उपयोगी सदस्य बनने की गरिमा प्राप्त करता है।

विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के द्वारा नौवीं कक्षा में स्कूली परीक्षा के आधार पर प्राप्त प्राप्तांक जिसके द्वारा उन्हें दसवीं में कक्षा में उत्प्रेषित किया गया। प्राप्त अंकों से संबंधित स्कूलों से सूची प्राप्त किया गया। यह अध्ययन के लिए चुना गया। चूंकि शैक्षणिक योग्यता की जानकारी इस आधार पर प्राप्त होती है। प्राप्त अंकों को सही माना गया। इसे किसी भी तरह से अकस्मात प्राप्त अंक नहीं माना गया। सभी छात्रों से संबंधित अंकों का संकलन स्कूल में रिकार्ड के रूप में प्राप्त किया गया। इसे आंतरिक परीक्षा माना गया। इनआंतरिक प्राप्त अंकों को विश्वसनीय शैक्षणिक उपलब्धि के लिए माना गया। कुल अंकों को छः अनिवार्य, तीन ऐच्छिक और एक दसवां पेपर जिसमें तीस अंक अनिवार्य किया गया और प्रत्येक पेपर एक सौ अंक के निर्धारित हुए। सभी छात्रों को एक हजार अंक का परीक्षा देना पड़ा। इसमें प्रायोगिक परीक्षा से संबंधित भी अंक सम्मिलित थे। यह सैद्धांतिक और प्रायोगिक दोनों से संबंधित थे।

छात्र एवं छात्राओं के द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षाओं में एक सौ छात्रों एवं एक सौ छात्राओं पर अध्ययन कर प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर मध्यमान, अर्धवार्षिक छात्र 366.81 एवं वार्षिक 410.59 प्रमाणित विचलन 142.90 एवं 126.02,

सह संबंध गुणांक 0.90 प्राप्त किया गया। जिससे इस मापने के विधि की सार्थकता विश्वसनीय एवं वैध पायी गई है। उपर्युक्त अध्ययन के संदर्भ में छात्र एवं छात्राओं से संबंधित प्राक्कल्पनाएँ स्थापित की जाती हैं।

इस संदर्भ में यह प्राक्कल्पना स्थापित किया जाता है कि उच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र एवं छात्राओं में निम्न अंक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं से शैक्षिक उपलब्धि अधिक अनुकूल पाई जायगी।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य शैक्षिक दृष्टि से बच्चे या उसके माता–पिता के बीच संबंध का अध्ययन कतिपय तथ्यों के संदर्भ में करना अभीष्ट था। अतः यह अध्ययन महाविद्यालय जाने वाले छात्र एवं छात्राओं के प्रतिदर्श पर किया जा रहा है। ये सभी इंटरमिडियट स्तर के छात्र एवं छात्राएँ होंगी। ये सभी मुजफ्फरपुर जिला अंतर्गत महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राएँ होंगी जिनकी संख्या 300 होगी।

प्रक्रियाः

शोध का उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि शैक्षिक दृष्टि से बच्चे एवं माता–पिता के बीच संबंध का प्रभाव किस रूप में पड़ता है, उसे देखने के लिए अन्य चरों को भी सम्मिलित किया गया है। इस उद्देश्य से अध्ययन के लिए अधोलिखित सात स्वतंत्र चरों को चुना गया।

आन्तरिक परीक्षा से प्राप्त प्राप्तांक और शैक्षिक उपलब्धि के दृष्टिकोण से छात्र–छात्राओं एवं माता–पिता के बीच सम्बन्ध का तुलनात्मक विवेचनः–

समूह	उच्च समूह	निम्न समूह
संख्या	68	74
मध्यमान	150.396	137.964
प्र.वि.	16.928	16.572
म. की प्र. त्रुटि	1.892	2.002
मध्यमानों का अंतर	12.432	
म. के अंतर की प्र. त्रुटि	2.654	
टी. अनुपात	4.514	
सार्थकता स्तर	0.01	

उपर्युक्त सारणी में छात्र–छात्राओं के आंतरिक परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांक के आधार पर शैक्षणिक दृष्टि से माता–पिता के साथ संबंध का तुलनात्मक विवेचन किया गया। प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान उच्च समूह के लिए 150.396 तथा निम्न समूह के लिए 137.964 प्राप्त हुआ है। इन दोनों ही समूहों के आधार पर मध्यमानो का अंतर 12.432 पाया गया है। इसकी सार्थकता की जाँच टी. अनुपात परीक्षण के आधार पर किया गया। प्राप्त टी. अनुपात 4.514 सार्थकता के 0.01 स्तर पर प्रमाणित हो रहा है। यह निष्कर्ष तृतीय अध्याय में वर्णित प्राक्कल्पना को सत्यापित करता है।

सम्पूर्ण प्रतिदर्श प्राप्तांक तथा माता–पिता से संबंधित प्राप्तांकों के बीच प्रोडक्ट मोमेन्ट सह–संबंध जांच को चालित किया गया जिससे इन दोनों ही चरों के संबंध की जाँच हुई। इस जाँच के आधार पर छात्र–छात्राओं एवं माता–पिता के बीच 0.329 सह–संबंध गुणांक प्राप्त हुआ। (गैरेट, 1955, सारणी जे. पेज–439)।

प्राप्त परिणाम के आधार पर प्राक्कल्पना से संबंधित निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ है।

(क) उच्च समूह के छात्र एवं छात्राओं में निम्न समुदाय के वनिस्पत माता–पिता के साथ अनुकूल सबंध देखा गया है।

(ख) छात्र–छात्राओं एवं उनके माता–पिता के बीच शैक्षिक दृष्टकोण से सार्थक संबंध प्रमाणित होता है।

(ग) जनसंख्या में इस चर का वितरण सामान्य वितरण सिद्धांत के अनुकूल सत्यापित होता है।

(घ) शैक्षिक दृष्टिकोण से आंतरिक परीक्षण प्राप्तांक एवं माता–पिता के बीच संबंध का विकास पर प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ

1. Miller, Scott A. (1986): Parents beliefs about their children's cognitive abilities. Developmental Psychology. (Mar), Vol. 22(2), 276 – 284.
2. Pinal, Philp: Abnormal Psychology and Modern life (eight edition), Colman, Illinois.1745-1826.
3. Rashmi (2019): In Investigation of the Influence of Family Environment on Child Development a Comparative Study of Urban and Rural Children of Chapra District, A Thesis of B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur.
4. Sangeeta (2008): Pita Ki Sakriyata: Problem and Solution: A Thesis of B.R.A. Bihar University Muzaffarpur.
5. Thakur, Lakshmeshwar (1988): Samajik Arthic Ebam, Katipay Vaykatitya Samabndhi Charon ke sandarbh Men Nari Mukti - Ek Vishleshan. Bihar University Thesis.
6. Tiwari, Govind (1983): Parent child relation in cross cultural perspective Asian Journal of Psychology and Education. Vol. II(1), 1-5.
7. Strom, Robert and Slaughter, Helen(1978):Measurement of child rearing expectations using the parent as teacher inventory, Vol. 46(4), 44-53.
8. Shaini, Saroj and Vasudera Pramila (1977): Conservatism, Radicalism, in children as related to conservatism red Calism in Mothers of levels of Socio economic Status Journal of Psychological researches, (Jan), Vol. 21 (2) 29-32.
9. Messmer, W. W. (1965): Parental Interaction of the adolescent boys J. of Genetic Psy. 107, 1965, PP 225-233.